

पांसुगुंठित वि. (तत्.) धूल से ढका हुआ।

पांसुमर्दन पुं. (तत्.) 1. थाला, थमला 2. क्यारी।

पाँ पुं. (देश.) पाँव।

पाँइ पुं. (देश.) पाँव।

पाँइता पुं. (देश.) पायँता, चारपाई का पैताना।

पाँउ पुं. (देश.) पाँव, पैर।

पाँउरी स्त्री. (देश.) पाँवड़ी।

पाँक पुं. (तद्.) पंक, कीचड़।

पाँख पुं. (तद्.) 1. पंख (पक्षियों के) 2. पख, पखवाड़ा।

पाँखड़ी/पाँखुड़ी स्त्री. (देश.) पंखड़ी (फूलों की)।

पाँखि/पाँखी वि. (देश.) पंखों वाला, परों वाला स्त्री.
(देश.) 1. पर या पंख 2. पक्षी, चिड़िया 3. पतंगा।

पाँखुरी स्त्री. (देश.) पंखुड़ी अथवा पंखड़ी (फूल की)।

पाँग पुं. (तद्.) 1. वह जमीन जो नदी के पीछे हट जाने से उसके किनारे पर निकलती है, तटीय भूमि, कछार, खादर 2. जुलाहे के करघे का ढाँचा।

पाँगल पुं. (तद्.) ऊँट, टि. राजस्थान में ऊँट अथवा जवान ऊँट को पांगल कहते हैं।

पाँगा नमक पुं. (देश.) समुद्री नमक।

पाँगुर स्त्री. (देश.) पैर की उँगली वि. (तद्.) पंगुल, पंगु, लँगड़ा।

पाँगुरना अं.क्रि. (देश.) 1. अंकुरित होना 2. पनपना 3. हृष्ट-पुष्ट होना 4. विहार करना।

पाँगुल वि. (तद्.) पंगुल, पंगु, लँगड़ा।

पाँच वि. (तद्.) चार से अधिक छह से कम पुं.
(तद्.) 1. पाँच मनुष्यों का समूह 2. अच्छे या प्रमुख लोग 3. समाज या बिरादरी आदि के पाँच लोग, पंचायत के सदस्य, पंच उदा. जौ पाँचहि मत लागे नीका -तुलसी मुहा. पाँचों उंगलियाँ घी में होना- सब प्रकार से लाभ ही लाभ; पाँचों

उंगलियाँ बराबर न होना- सबका समान न होना।

पाँचक पुं. (तद्.) पंचक।

पाँचड़/पाँचै/पाँचें स्त्री. (देश.) (चंद्रमास किसी पक्ष की) पंचमी तिथि।

पाँच पंच पुं. (तद्.) सब या प्रमुख लोग।

पाँच भौतिक वि. (तद्.) 1. जिसका संबंध पंचभूतों से हो 2. पंचभूतों से बना हुआ जैसे- पाँच भौतिक शरीर।

पाँचयज्ञिक वि. (तद्.) पंच यज्ञ संबंधी पुं. (तद्.) पाँच प्रकार के यज्ञों में से प्रत्येक।

पाँचतख्त पुं. [तद्. पाँच + फा. तख्त] सिखों के पाँच पीठ जिनके अधिकारियों का निर्णय पंथ के सब विवादों में अंतिम माना जाता है, ये पीठ अथवा तख्त हैं- 1. अकाल तख्त-अमृतसर 2. हरमंदिर साहिब-पटना 3. आनंदपुर साहिब-आनंदपुर (पंजाब) 4. हुजूर साहिब-नांदेड़ (महाराष्ट्र) 5. दमदमा साहिब-तलवंडी (पंजाब) इनमें प्रथम अकाल तख्त प्रथम गुरु हरगोविंद से संबंधित है, शेष चार गुरु गोविंदसिंह से संबंधित हैं।

पाँचर पुं. (देश.) कोल्हू के बीच में जड़े हुए लकड़ी के वे छोटे टुकड़े जो गन्नों को दबाने के लिए लगाए जाते हैं।

पाँचवर्षिक वि. (तद्.) पाँच वर्ष में होने वाला, पंचवर्षीय।

पाँचवा वि. (देश.) क्रम या गिनती में पाँच के स्थान पर पड़ने वाला।

पाँच शाब्दिक पुं. (तद्.) करताल, ढोल, बीन, घंटा और भेरी ये पाँच प्रकार के बाजे।

पाँचेक पुं. (देश.) 1. लगभग पाँच 2. थोड़े से।

पाँचै स्त्री. (देश.) चांद्रमास के किसी पक्ष की पंचमी तिथि।

पाँछना स.क्रि. (देश.) त्वचा को खुरचना, छीलना।

पाँछि क्रि.वि. (देश.) त्वचा को खुरचकर अथवा छीलकर उदा. मरमु पाँछि जनु माहुरु देई-तुलसी।